पाठ-14 मुसकराहट का राज़

मौखिक प्रश्न

क. युवक को देखकर लेखक के मन में यह विचार जागा कि उठकर उसके पास पहुँच जाए और अपनी गुणवत्ता से उसे परिचित करा दे।

ख. लेखक ने बिना भूमिका बाँधे युवक से यह प्रश्न किया 'आप टेबल टेनिस नहीं खेलते क्या?'

ग. 'पिंग-पोंग' टेबल टेनिस को कहते हैं।

घ. पहले दिन लेखक ने युवक को सही तरीके से रैकेट पकड़ना सिखाया।

लिखित प्रश्न

1. क. टेबल टेनिस ☑ ख. अखबार ☑
2. क. कन्नी ख. बाँध ग. श्रीगणेश घ. हिम्मत ङ. जन्मदिन च. खिलाड़ी
3. क. लेखक ने युवक को रैकेट को सही प्रकार से पकड़ने और गेंद को हथेली पर रखकर उसे सर्व करने का तरीका समझाया।

   ख. युवक बार-बार प्रयास करके भी गेंद को सही प्रकार से उछाल नहीं पा रहा था, इसे देखकर लेखक का धैर्य जवाब दे रहा था।

   ग. नौसिखिया से अभिप्राय है—अनाड़ी। यदि कोई व्यक्ति किसी काम के बारे में नहीं जानता हो, तो उसे उस काम में नौसिखिया अर्थात अनाड़ी समझा जाता है।

   घ. 'नौसिखियों के साथ ऐसा ही होता है। घबराओ नहीं, धीरज रखो। बस कुछ ही दिनों की मेहनत है, फिर तो सब अपने-आप ही होता जाएगा।' यह कहते हुए लेखक ने युवक को उत्साहित करने का प्रयास किया है।
4. क. लेखक ने टेबल टेनिस खेल के बारे में युवक को बताया कि टेबल टेनिस एक खेल है, इसे 'पिंग-पोंग' भी कहते हैं। यह खेल चाहे बारिश हो या गरमी, कभी भी खेल सकते हैं, क्योंकि यह कमरे के अंदर खेला जाता है।

   ख. युवक के 'फिर कभी' के उत्तर में लेखक ने कहा,'नहीं भाई, शुभ काम में देर नहीं करते। आज ही श्रीगणेश कीजिए, कल किसने देखा है। कल-कल करते तो जिंदगी बीत जाएगी, फिर कब सीखोगे।'

   ग. युवक ने हाथ जोड़कर लेखक को प्रणाम किया, तो उन्हें लगा कि मानो वह शिष्य की भाँति उनसे जाने की आज्ञा माँग रहा हो। इसलिए, लेखक ने युवक को गुरु की भाँति 'यशस्वी भवः' का आशीर्वाद दिया।

   घ. युवक को पुनः आने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से लेखक ने उसे उत्साहित करते हुए कहा, 'हिम्मत नहीं हारते, सीखते जाओ। एक दिन चोटी का स्टार बना दूँगा। ऐसे सीख जाओगे कि दूसरों को सिखाकर ही अच्छा-खासा कमा लोगे।'

   ङ. लेखक ने युवक का स्वागत गर्मजोशी से इसलिए किया, क्योंकि वह उसे अपने मित्रों और परिवारजनों से मिलवाकर अपनी योग्यता का प्रमाण देना चाहता था।
5. क. लेखक स्वयं को टेबल टेनिस खेल का अच्छा ज्ञाता मानता था, इसलिए उसे जहाँ कहीं भी मौका मिलता, दूसरों को टिप्स देने से न चूकता, उनकी गलतियों को पकड़ता और उनमें सुधार के उचित उपाय बताता, जिसके कारण लोग उसे देखकर कन्नी काटते थे और वे लेखक की इस आदत से परेशान हो गए थे।

ख. लेखक अगले दिन झटपट तैयार होकर बिना सुबह की सैर किए सीधे खेल परिसर के चक्कर लगाने लगा। उसे युव नज़र नहीं आया। युवक के न आने पर लेखक उदास हो गया। ज्यों-ज्यों समय बीतता जा रहा था, उसकी निराशा ब रही थी। उसके दिल की धड़कनें कम होने लगीं। ऐसा लगने लगा, मानों कोई खज़ाना हाथ में आकर निकल गया हो अपनी आँखें बंदकर ईश्वर से उससे मिलाने की प्रार्थना करने लगा।

ग. युवक को सही प्रकार से रैकेट पकड़ना सिखाने में लेखक को बहुत परेशानियाँ हुईं। लेखक ने युवक को रैकेट पकड़ सिखाते हुए युवक की उँगलियों तथा अँगूठे को सही स्थान पर रखा, लेकिन युवक ने ज़ोर-से रैकेट को अपने हाथ लिया। जब लेखक ने कहा,'नहीं-नहीं इतने ज़ोर-से नहीं, थोड़ा हलका पकड़िए।' लेखक के कहते ही युवक ने अपनी ढीली करते हुए रैकेट को लगभग छोड़ ही दिया।

घ. लेखक के बेटे ने युवक का परिचय देते हुए लेखक को यह बताया कि ये मेरे टेबल टेनिस के कोच हैं। बहुत कुशल इन्होंने तो कई टूर्नामेंट जीते हैं। इन्हीं के प्रशिक्षण की वजह से तो हमारे विद्यालय के बच्चे पिछली राज्यस्तरीय प्रति में प्रथम आए थे। अपने बेटे के मुँह से युवक के बारे में ये सारी बातें सुनकर लेखक के मन में धरती फटने और उ जाने का विचार आया।

6. सुनो और लिखो।

शिक्षक शब्दों का शुद्ध उच्चारण करते हुए बोलें और छात्र ध्यानपूर्वक सुनकर शब्दों को लिखें।

सोचो और बताओ

विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

भाषा बोध

1. ख. संबंधबोधक ग. समुच्चयबोधक घ. निपात, समुच्चयबोधक ङ. विस्मयादिबोधक
2. क. रोशनी ने आज से ही पढ़ाई का श्रीगणेश किया है।
   ख. सारिका के लिए खाना बनाना बाएँ हाथ का खेल है।
   ग. गरिमा के व्यवहार के कारण सभी उससे कन्नी काटते हैं।
   घ. कुत्ते को देखकर राहुल दुम दबाकर भाग गया।
3. क. से करण कारक
   ख. का संबंध कारक
   ग. पर अधिकरण कारक
   घ. में अधिकरण कारक
4. ख. मेरा बेटा पैर छू रहा था।
   ग. एक युवक कुरसी पर बैठकर अखबार पढ़ रहा था।
   घ. मेरे सब्र का बाँध टूट गया।
   ङ. दिल की धड़कनें कम होने लगीं।
5. क. वह प्रतिदिन आने लगा।
   ख. उसने मुझे कोई उत्तर नहीं दिया।
   ग. गेंद उछलकर बाहर गिर गई।
   घ. वह सिर हिलाकर मुसकरा दिया।
6. ख. मैंने उसे नया पाठ सिखाया।
   ग. उसने ज़ोर-से गेंद उछाल दी।
   घ. मेरा धैर्य जवाब दे गया।

विद्यार्थी पढ़ें और जानें।

पाठ-15 सैनिक का बेटा

मौखिक प्रश्न

क. नन्हे बच्चे ने जलते हुए यान से यान के चालक को कूदते देखा।

ख. पायलट ने अपनी जेब से कागज़ों का एक बंडल निकाला।

ग. दुश्मन की गोली बच्चे के पैर में लगी थी।

घ. बच्चे के पिता ने उससे कहा था,'सैनिक दुश्मन से दूर कभी नहीं भागता। सीना छलनी हो जाने पर भी उसे गोलियों का सामना करना चाहिए।'

लिखित प्रश्न

1. क. पैराशूट ☑ ख. कमांडर को ☑
2. क. शिविर ख. सेना ग. स्ट्रेचर घ. बालक ङ. पायलट
3. क. बच्चे का नाम मकबूल बट था।
   ख. बच्चे के पिता सैनिक थे।
   ग. विमान को गिराने के लिए दुश्मन ने उसपर विमानभेदक तोप चलाया।
   घ. बच्चे ने ज़मीन पर पायलट को गिरते हुए देखा।
4. क. लड़खड़ाते हुए विमान की तुलना ऐसे पक्षी से की गई है, जो अपनी उड़ान को जारी रखने और संतुलन बनाए रखने की आखिरी उम्मीद में फड़फड़ाता हुआ संघर्ष कर रहा होता है क्योंकि, विमान पर विमानभेदक तोप से प्रहार हो चुका था।
   ख. दुश्मन ने बच्चे का पीछा छोड़ अपना ध्यान रेंगते-खिसकते पायलट की ओर इसलिए लगाया, क्योंकि बालक को गोली लग चुकी थी और उन्हें बालक की हिम्मत का पता नहीं था कि वह इतने साहस का काम कर जाएगा।
   ग. बच्चा कमान अधिकारी को पायलट द्वारा दिए गए कागज़ों का बंडल देने के लिए मिलना चाहता था।
   घ. बच्चे के पिता ने अपने देश के लिए बलिदान दिया था। अब बच्चे ने भी राष्ट्र के लिए अपना खून बहाया था। उसकी दिलेरी और राष्ट्रप्रेम के कारण उसके माता-पिता को उस पर गर्व होगा।
5. क. आकाश में एक हवाई जहाज़ दुर्घटनाग्रस्त होकर ज़मीन की ओर आ रहा था। पेड़ों के झुरमुट में से ननें बालक ने आकाश में उस हवाई जहाज़ पर शत्रु का गोला लगते और जलते हुए यान से एक चालक को पैराशूट से कूदते देखा।

भारती भव

ख. 'अब अपने जीवन और देश के लिए दौड़ पड़ो।' पायलट ने बालक से ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि उसे पता था कि दुश्मनों ने अगर बालक को देख लिया, तो उसे जान से मार देंगे और जो कागज़ों का बंडल था उसमें देश से संबंधित कोई महत्व-पूर्ण सूचना थी, जिसे दुश्मन के हाथ लगने से बचाना था। अन्यथा बालक की जान भी जाती और बंडल भी दुश्मन के हाथ लग जाते।

ग. कमान अधिकारी को मकबूल बट ने अपने बारे में बताते हुए कहा, मेरे पिता को वीरता के लिए पदक मिल चुका है। वे देश के लिए लड़ते हुए शहीद हुए थे। अब मैं और मेरी माँ वहाँ रहते हैं। जब विमानभेदक तोप चलने की आवाज़ सुनाई दी, तब मैं विमान को देख रहा था। मैं जानता था कि उसे बचाना बहुत ज़रूरी है। दुश्मन बस थोड़ी ही दूरी पर था। मैं उसे एक छोटे रास्ते से बचाने के लिए भागा। जब मैं वहाँ पहुँचा, तो पाया कि वह चल नहीं सकता। उसका खून निकल रहा था।

घ. मकबूल बट बहुत साहसी और हिम्मती बच्चा था। अपने साहस के कारण ही वह दुश्मनों का सामना करते हुए पायलट का दिया हुआ बंडल सही समय पर कमान अधिकारी के पास पहुँचाता है। उसने गोली लगने और दुश्मनों द्वारा पीछा करने पर भी हिम्मत नहीं हारी और देश के लिए दौड़ा तथा वह ऐसा करने में कामयाब भी रहा। उसने अपनी सूझ-बूझ से पायलट को भी दुश्मनों के चंगुल से बचाने में अधिकारी की सहायता की।

6. सुनो और लिखो।

शिक्षक शब्दों का शुद्ध उच्चारण करते हुए बोलें और छात्र ध्यानपूर्वक सुनकर शब्दों को लिखें।

सोचो और बताओ

यदि बालक पायलट की सहायता नहीं करता, तो महत्वपूर्ण सूचना शत्रुओं के हाथ लग जाती और उन्हें सूचना के बारे में जानकारी हो जाती तथा पायलट की जान भी नहीं बच पाती।

भाषा बोध

1. क. टपक ख. वह ग. लड़खड़ा घ. गूँज ङ. फड़फड़ा
2. क. अल्पविराम ख. उद्धरण चिह्न ग. प्रश्नवाचक घ. विस्मयादिबोधक ङ. पूर्णविराम
3. ग. सकर्मक क्रिया घ. सकर्मक क्रिया ङ. अकर्मक क्रिया च. अकर्मक क्रिया
4. ख. माता और पिता — द्वंद्व समास
   ग. हाथ-ही-हाथ में — अव्ययीभाव समास
   घ. देश के लिए भक्ति — तत्पुरुष समास
   ङ. भला है जो मानव — कर्मधारय समास
   च. तीन रंगों का समूह — द्विगु समास
5. क. मैं चल नहीं सकूँगा।
   ख. हवाई जहाज़ आसमान में लड़खड़ाएगा।
   ग. वह पायलट को सुरक्षित निकाल लाएगा।
   घ. वह सावधान की मुद्रा में खड़ा हो जाएगा।
   ङ. अब मेरा खून भी इसी मिट्टी में गिरेगा।

सुनना और बोलना

ज्ञान विस्तार

विद्यार्थी पढ़ें और जानें।

पाठ-16 कदम मिलाकर चल

मौखिक प्रश्न

क. 'कदम मिलाकर चल' द्वारा कवि कहना चाहता है कि हमें मिल-जुलकर आगे बढ़ना चाहिए।

ख. मंज़िल पर पहुँचने के लिए उत्साह की बहुत आवश्यकता है, इसलिए कवि ने कहा है कि जोश ठंडा न होने पाए।

ग. खून पसीना बहाकर, मेहनत करके नया सवेरा लाने के लिए कवि ने मँझधार में रहने की बात की है।

घ. यह गीत हमें निरंतर साथ मिल-जुलकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

लिखित प्रश्न

1. क. राष्ट्रहित ☑ ख. काँटे ☑
2. क. नहीं ख. हाँ ग. हाँ घ. नहीं
3. क. कवि ने 'सबकी' सर्वनाम का प्रयोग अनेकता में एकता के संदर्भ में किया है।

   ख. शूल बिछे अगणित राहों में,
   राह बनाता चल।

   ग. उपर्युक्त काव्यांश के माध्यम से कवि कहना चाह रहा है कि हम सभी को चाहे कितनी बाधाएँ हमारे मार्ग में आए, हमें अपनी मंज़िल बनाते जाना है। हमारे मेहनत और प्रयास से आज नहीं तो कल, मंज़िल हमें ज़रूर मिलेगी।

   घ. हम सबकी मेहनत, ताकत, हिम्मत एक है, इज़्ज़त, दौलत और किस्मत एक है, यदि हम इसे मिला दें, तो हमें आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता है। इसलिए, हमें एकता के भाव रखते हुए आगे बढ़ते जाना है।

4. नूतन वेदी, बलिदानों की,
   माँगे आज जवानी।
   देनी होगी, हम सबको ही,
   देश हेतु कुरबानी।।

5. क. मंज़िल तक पहुँचने के लिए हमें अपने जोश को बनाए रखना पड़ेगा और एक साथ मिल-जुलकर आगे बढ़ना होगा।

   ख. खून-पसीना बहाकर अपनी मेहनत और लगन से नया सवेरा लाया जा सकता है।

   ग. देश को हमसे यही अपेक्षाएँ है कि हम सभी देश के लिए कुरबान होने के लिए तैयार रहे, क्योंकि आज देश की नूतन वेदी को हम जवानों की आवश्यकता है। इसके लिए हम सदैव तैयार रहें, यही देश की हमसे अपेक्षा है।

   घ. जोश न ठंडा होने पाए, कदम मिलाकर चल। मंजिल तेरा पग चूमेगी, आज नहीं तो कल।।

6. क. इस कविता का मूलभाव है—एक साथ मिल-जुलकर चलना, मंज़िल पर पहुँचने के लिए उत्साह बनाए रखना, चाहे कितनी ही बाधाएँ क्यों न आ जाएँ, उनमें अपनी राह बनाना और अपनी मेहनत और लगन से नया सवेरा लाना। देश के लिए अपनी कुरबानी देने की अपेक्षाओं के लिए तैयार रहना और राष्ट्र के प्रति समर्पित रहना। सबकी ताकत और सबकी किस्मत को एक बनाकर अनेकता में एकता का संचार करते हुए बस आगे बढ़ते हुए मंज़िल पर पहुँचने के लिए निरंतर प्रयास करते रहना।

ख. 'मंज़िल तेरा पग चूमेगी, आज नहीं तो कल' पंक्ति में कवि ने आशावादिता का संदेश दिया है। हम इस कथन से स
क्योंकि कवि ने कहा है कि तुम आशा के साथ पूरे जोश से निरंतर आगे बढ़ते जाओ। अथक परिश्रम से तुम्हें आज
कल सफलता ज़रूर मिलेगी और तुम निश्चित रूप से अपनी मंज़िल तक पहुँच जाओगे। इससे पता चलता है कि
आशावादिता का संदेश दिया है।

ग. 'शंख ध्येय का, पार्थ बजा है, ले गांडीव सँभल' पंक्ति का आशय है, हे पार्थ! तुम्हारे लक्ष्य का निर्धारण हो चुका
अपने पूरे जोश, हिम्मत और साहस के साथ मिल-जुलकर मंज़िल को प्राप्त करने के लिए अपना गांडीव लेकर तैय
जाओ और तब तक प्रयास करते रहो आगे बढ़ने का, जब तक अपनी मंज़िल न प्राप्त कर लो।

7. सुनो और लिखो।

शिक्षक शब्दों का शुद्ध उच्चारण करते हुए बोलें और छात्र ध्यानपूर्वक सुनकर शब्दों को लिखें।

सोचो और बताओ

यदि हम निरंतर आगे बढ़ने के स्थान पर थक-हारकर बैठ जाएँ, तो हमारी मंज़िल पर पहुँचने की जो आशा है, वह कभी पू
होगी। वह बस सपना बनकर रह जाएगी। इसलिए, हमें निरंतर आगे बढ़ने का प्रयास पूरे जोश और उत्साह से करना चाहिए

भाषा बोध

1. क. तुम्हें मेरी बात माननी ही पड़ेगी।
   ख. इतना कहने के बाद भी वह चलने के लिए राजी नहीं हुआ।
   ग. मोहन ने दिनभर काम किया है।
   घ. उसे आज तो जल्दी जाना होगा।
   ङ. मेरे पास मात्र सौ रुपए हैं।

2. क. रास्ता ख. काँटे ग. धन घ. कदम ङ. रक्त च. गंतव्य स्थान/मुकाम
3. क. कल ख. खेवैया ग. सवेरा घ. कुरबानी ङ. कल च. कल
4. क. एकता में बल ख. कमर कसना ग. प्रण करना घ. जोश ठंडा होना ङ. जी-तोड़ मेहनत करना
5.

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया	द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया
ख. बनाना	बनवाना
ग. बजाना	बजवाना
घ. दिलाना	दिलवाना
ङ. लगाना	लगवाना

6. ख. कदम को मिलाकर चल।
   ग. मंज़िल तेरे पग को चूमेगी।
   घ. ले गांडीव को सँभाल।
   ङ. छोड़ दे नैया को, अरे खेवैया।

सुनना और बोलना